अंक १

संख्या १

बुधवार,

११ फरवरी, १९५३

सत्यमेव जयते

1st Lok Sabha

संसदीय वाद विवाद

लोक सभा

शासकीय वृत्तान्त

[हिन्दी संस्करण]

—:o:—

भाग २—प्रश्न और उत्तर से पृथक् कार्यवाही

विषय-सूची

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण [पृष्ठ भाग १]

पटल पर रखे गये पत्र—

राष्ट्रपति का अभिभाषण [पृष्ठ भाग १–१७]

श्री गोपालस्वामी अय्यंगार, श्री नलिनी रंजन सरकार और वी० आई० मूनिस्वामी पिल्ले का देहान्त [पृष्ठ भाग १७–२६]

(मूल्य ६ आने)

167 PSD

Preservation Unit 13.3.9? Fumigated On... Parliament Library

लोक सभा

सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची

अ

अकरपुरी, सरदार तेजा सिंह (गुरुदासपुर)

अग्रवाल, प्रो० श्रीमन्नारायण (वर्धा)

अग्रवाल, श्री होती लाल [जिला जालौन व जिला इटावा—(पश्चिम) व जिला झांसी—(उत्तर)]

अग्रवाल, श्री मुकन्द लाल [जिला पीलीभीत व जिला बरेली—(पूर्व)]

अचलू, श्री सुंकम (नलगोंडा—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

अचल सिंह, सेठ [जिला आगरा (पश्चिम)]

अचिन्त राम, लाला (हिसार)

अच्युतन, श्री के० टी० (क्रैंगन्नूर)

अजीत सिंह, श्री (कपूरथला-भटिंडा—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

अजीत सिंहजी, जनरल (सिरोही-पाली)

अन्सारी, डा० शौकतुल्ला शाह (बीदर)

अब्दुल्लाभाई, मुल्ला ताहिर अली मुल्ला (चांदा)

अब्दुस्सत्तार, श्री (कलना-कटवा)

अमजद अली, श्री (ग्वालपाड़ा-गारो पहाड़ियां)

अमीन, डा० इन्दुभाई बी० (बड़ौदा पश्चिम)

अमृत कौर, राजकुमारी (मंडी-महासु)

अय्यंगार, श्री एम० अन्नतशयनम् (तिरुपति)

अलगेशन, श्री ओ० बी० (चिंगलपुट)

अलवा, श्री जोशिम (कनारा)

अस्थाना, श्री सीताराम (जिला आजमगढ़ पश्चिम)

अहमद मुहिउद्दीन, श्री (हैदराबाद नगर)

आ

आजाद, मौलाना अबुल कलाम (ज़िला रामपुर व ज़िला बरेली—पश्चिम)

आजाद, श्री भगवत झा (पूर्निया व संथाल परगना)

आनन्द चन्द, श्री (बिलासपुर)

आल्तेकर, श्री गणेश सदाशिव (उत्तर सतारा)

इ

इब्राहीम, श्री ए० (रांची उत्तर पूर्व)

इय्यानी, श्री इयाचरण (पोन्नानी—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

इयुन्नी, श्री सी० आर० (त्रिचूर)

इलयापेरूमल, श्री एल० (कुडलूर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

उ

उइके, श्री एम० जी० (मांडला-जबलपुर—दक्षिण—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

उपाध्याय, पंडित मुनीश्वर दत्त (ज़िला प्रतापगढ़—पूर्व)

उपाध्याय, श्री शिवदत्त (सतना)

उपाध्याय, श्री शिवदयाल ज़िला बांदा व ज़िला फतहपुर)

ए

एबनजिर, डा० एस० ए० (विकाराबाद)

एन्थनी, श्री फ्रैंक (नाम निर्देशित—आंग्ल-भारतीय)

क

कक्कन, श्री पी० (मदुरई—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

कजरोलकर, श्री नारायण सदोबा (बम्बई नगर—उत्तर रक्षित—अनुसूचित जातियां)

कतम, श्री वीरेन्द्रनाथ (उत्तर बंगाल—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

कंडासामी, श्री एस० के० (तिरुचनगोड)

कमल सिंह, श्री (शाहाबाद उत्तर-पश्चिम)

करमरकर, श्री डी० पी० (धारवाड़—उत्तर)

कर्णी सिंह जी, हिज़ हाईनेस महाराजा श्री बहादुर आफ बीकानेर (बीकानेर-चुरु)

कास्लीवाल, श्री नेमी चन्द्र (कोटा-झालावाड़)

कांबले, श्री देवराओ नामदेवराओ पन्निकर (नांदेड़—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

काचिरोयर, श्री एन० डी० गोविन्द स्वामी (कुडलूर)

काज़मी, श्री सैयद मुहम्मद अहमद (ज़िला सुलतानपुर—उत्तर व ज़िला फ़ैजाबाद—दक्षिण—पश्चिम)

काठजू, डा० कैलाश नाथ (मंदसौर)

कानूनगो, श्री नित्यानन्द (केन्द्रपाड़ा)

कामराज, श्री के० (श्री विल्लिपुतूर)

काल, श्रीमती अनुसूया बाई (नागपुर)

किदवई, श्री रफी अहमद (ज़िला बहराइच—पूर्व)

किरोलिकर, श्री वासुदेव श्रीधर (दुर्ग)

कुरील, श्री बैज नाथ (ज़िला प्रतापगढ़ पश्चिम व ज़िला रायबरेली—पूर्व—रक्षित अनुसूचित जातियां)

कृपलानी, श्रीमती सुचेता (नई देहली)

कृष्ण, श्री एम० आर० (करीमनगर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

कृष्णचंद्र, श्री (जिला मथुरा—पश्चिम)

कृष्णप्पा, श्री एम० वी० (कोलार)

कृष्णमाचारी, श्री टी० टी० (मद्रास)

कृष्णस्वामी, डा० ए० (कांचीपुरम्)

केलप्पन, श्री के० (पोन्नानी)

कशवैयंगार, श्री एन० (बंगलौर—उत्तर)

केसकर, डा० बी० वी० (ज़िला सुलतानपुर—दक्षिण)

कोले, श्री जगन्नाथ (बांकुरा)

कोसा, श्री मुचाकी (बस्तर—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

कौशिक, श्री पन्नालाल आर० (टोंक)

ख

खर, डा० एन० बी० (ग्वालियर)

खडकर, श्री बी० एच० (कोल्हापुर व सतारा)

खान, श्री शाहनवाज़ (ज़िला मेरठ—उत्तर पूर्व)

खान, श्री सादत अली (इब्राहीम पटनम्)

खीमजी, श्री भवान जी ए० (कच्छ—पश्चिम)

खेडकर, श्री गोपालराव बाजीराव (बुलडाना-अकोला)

खोंगमन, श्रीमती बी० (स्वायत्त जिले—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

ग

गंगादेवी, श्रीमती (ज़िला लखनउ व जिला बाराबंकी—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

गर्ग, श्री राम प्रताप (पटियाला)

गणपतिराम, श्री [ि ा जौनपुर (पूर्व) रक्षित—अनुसूचित जातियां]

गांधी, श्री माणिक लाल मगनलाल (पंच महल व बड़ौदा पूर्व)

गांधी, श्री फ़ीरोज [जिला प्रतापगढ़ (पश्चिम) व जिला रायबरेली (पूर्व)

गांधी, श्री वी० बी० (बम्बई नगर — उत्तर)

गाडगिल, श्री नरहर विष्णु (पूना मध्य)

गिडवानी, श्री चौयथ राम परताबराय (थाना)

गिरि, श्री वी० वी० (पठपटनम्)

गिरिराज सरन सिंह, श्री (भरत पुर-सवाई माधोपुर)

गुप्त, श्री बादशाह (जिला मैनपुरी—पूर्व)

गुरुपादस्वामी, श्री एम० एस० (मैसूर)

गुलाम कादिर खां, (जम्मू तथा काश्मीर)

गुह, श्री अरुण चन्द्र (शांतिपुर)

गोपालन, श्री ए० के० (कन्नानूर)

गोपीराम, श्री (मंडी-महासु—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

गोविन्द दास, सेठ (मंडला-जबलपुर दक्षिण)

गोहैन, श्री चौखामून (नाम-निर्देशित—आसाम आदिम जाति क्षेत्र)

गौड, श्री टी० मादय्या (बंगलौर दक्षिण)

गौतम, श्री सी० डी० (बालाघाट)

गौंडर, श्री के० शक्ति वाडिवेल (पेरियाकुलम्)

गौंडर, श्री के० पेरियास्वामी (इरोड)

घ

घोष श्री अतुल्य (बर्दवान)

घोष, श्री सुरेन्द्र मोहन (माल्दा)

च

चक्रवर्ती श्रीमती रेणु (बसीरहाट)

चटर्जी श्री एन० सी० (हुगली)

चटर्जी, श्री तुषार (श्रीरामपुर)

चटर्जी डा० सुशील रंजन (पश्चिम दीनाजपुर

चट्टोपाध्याय, श्री हरीन्द्रनाथ (विजयवाड़ा)

चंडक, श्री बी० एल० (बेतूल)

चतुर्वेदी, श्री रोशन लाल [ज़िला एटा—(मध्य)]

चन्दा, श्री अनिल कुमार (बीरभूम)

चन्द्रशेखर, श्री पी० एम० (तिरुवल्लूर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

चरक, श्री लक्ष्मण सिंह (जम्मू तथा काश्मीर)

चाको, श्री पी० टी० (मीनाचिल)

चावदा, श्री अकबर (बनस्कंठ)

चिनारिया, श्री हीरासिंह (महेन्द्रगढ़)

चेट्टियार, श्री टी० एस० अविनाशी लिंगम (तिरुपुर)

चेट्टियार, श्री वी० वी० आर० एन० ए० आर० नागप्पा (रामनाथपुरम्)

चौधरी, श्री निकुंज बिहारी (घाटल)

चौधरी, श्री मुहम्मद शकी (जम्मू तथा काश्मीर)

चौधरी, श्री सी० आर० (नरसरावपेट)

चौधरी, श्री रणवीर सिंह (रोहतक)

चौधरी, श्री रोहिणी कुमार (गौहाटी)

चौधरी, श्री गणेशी लाल [जिला शाहजहांपुर—(उत्तर) व खेरी—(पूर्व)—रक्षित—अनुसूचित जातियां]

चौधरी, श्री त्रिदिव कुमार (बरहामपुर)

ज

जगजीवन राम, श्री (शाहाबाद दक्षिण—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

जजवाड़े, श्री राम राज (संथाल परगना व हज़ारी बाग)

जयपाल सिंह, श्री (रांची पश्चिम—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

जयरमन, श्री ए० (टिंडीवनम्—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

जयसूर्य, डा० एन० एम० (मेदक)

जसानी, श्री चतुर्भुज वी० (भंडारा)

जांगड़े, श्री रेशम लाल (बिलासपुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

जाटववीर, डा० मानिक चन्द (भरतपुर-सवाई माधोपुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

जठन, श्री खेरवार (पालामऊ व हज़ारी बाग व रांची—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

जेना, श्री कान्हु चरण (बालासोर—रक्षित अनुसूचित जातियां)

जेना, श्री निरंजन (ढेनकनाल—पश्चिम कटक—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

जेना, श्री लक्ष्मीधर (जाजपुर-क्योंझर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

जैदी, कर्नल बी० एच० (ज़िला हरदोई—उत्तर-पश्चिम व ज़िला फर्रुखाबाद—पूर्व व जिला शाहजहांपुर—दक्षिण)

जैन, श्री अजित प्रसाद (ज़िला सहारनपुर—पश्चिम व जिला मुजफ्फरनगर—उत्तर)

जैन, श्री नेमी सरन (जिला बिजनौर—दक्षिण)

जोगेन्द्र सिंह, सरदार (जिला बहराइच—पश्चिम)

जोशी, श्री नन्दलाल (इन्दोर)

जोशी, श्री मोरेश्वर दिनकर (रत्नगिरि दक्षिण)

जोशी, श्री कृष्णाचार्य (यादगीर)

जोशी, श्री जेठालाल हरिकृष्ण (मध्य सौराष्ट्र)

जोशी, श्री लीलाधर (शाजापुर-राजगढ़)

जोशी, श्रीमती सुभद्रा (करनाल)

ज्वाला प्रसाद, श्री (अजमेर—उत्तर)

झ

झुनझुन वाला, श्री बनारसी प्रसाद (भागलपुर मध्य)

ट

टंडन, श्री पुरुषोत्तम दास [जिला इलाहाबाद (पश्चिम)]

टामस, श्री ए० एम० (एरणाकुलम्)

टामस, श्री ए० वी० (श्री बैकुंठम)

टेक चन्द, श्री (अम्बाला-शिमला)

ड

डामर, श्री अमर सिंह साबजी (झबुआ—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

त

तालिब, श्री प्यारे लाल कुरील (जिला बांदा व जिला फतहपुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

तिम्मया, श्री डोडा (कोलार—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

तिरुकुरलार, श्री वी० मुनिस्वामी अल्ल० (टिंडीवनम्)

तिवारी, श्री राम सहाय (छतरपुर-दतिया-टीकमगढ़)

तिवारी, सरदार राज भानु सिंह (रीवा)

तिवारी, पंडित द्वारकानाथ (सारन दक्षिण)

तिवारी, पंडित बी० एल० (नीमाड़)

तिवारी, श्री बैकुंटेश नारायण (जिला कानपुर—उत्तर व जिला फर्रुखाबाद—दक्षिण)

तीर्थ, स्वामी रामानन्द (गुलबर्गा)

तुडू, श्री भरत लाल (मिदनापुर-झाड़ग्राम—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियाँ)

तुलसीदास किलाचन्द, श्री (मेहसाना—पश्चिम)

तेलकीकर, श्री शंकर राव (नान्देड़)

त्यागी, श्री महावीर (जिला देहरादून व जिला बिजनौर—उत्तर पश्चिम व जिला सहारनपुर—पश्चिम)

त्रिपाठी, श्री हीरावल्लभ (जिला मुज़फ्फर नगर—दक्षिण)

त्रिपाठी, श्री कामाख्य प्रसाद (दरंग)

त्रिपाठी, श्री विशंभर दयाल (जिला उन्नाव व जिला राय बरेली—पश्चिम व जिला हरदोई—दक्षिण पूर्व)

त्रिभुवन नारायण सिंह, श्री (जिला बनारस—पूर्व)

त्रिवेदी, श्री उमाशंकर मूलजीभाई (चित्तौड़)

थ

थिरानी, श्री जी० डी० (बारगढ़)

द

दत्त, श्री असीम कृष्ण (कलकत्ता दक्षिण-पश्चिम)

दत्त, श्री सन्तोष कुमार (हावड़ा)

दत्त, श्री वीरेन (त्रिपुरा पश्चिम)

दाभी, श्री फूलसिंह जी बा० (कैरा उत्तर)

दामोदरन, श्री नतूर पी० (तेलिचरी)

दामोदरन, श्री जी० आर० (पोल्लाची)

दातार, श्री बलवन्त नागेश (बलगांव उत्तर)

दास, श्री नयन तारा (मुंगेर सदर व जमुई—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

दास, डा० मन मोहन (वर्दवान—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

दास, श्री श्रीनारायण (दरभंगा मध्य)

दास, श्री कमल कृष्ण (वीरभुंम—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

दास, श्री बी० (जाजपुर-क्योंझर)

दास, श्री बसन्त कुमार (कोन्टाई)

दास, श्री विजय चन्द्र (गंजम दक्षिण)

दास, श्री बेली राम (बारपेटा)

दास, श्री राम धनी (गया पूर्व—राक्षत—अनुसूचित जातियां)

दास, श्री रामानन्द (बैरकपुर)

दास, श्री सारंगधर (ढेनकनाल-पश्चिम कटक)

दिगम्बर सिंह, श्री [जिला एटा—(पश्चिम) व जिला मैनपुरी—(पश्चिम) व जिला मथुरा—(पूर्व)]

दिग्विजय नारायण सिंह, श्री (मुज़फ्फरपुर—उत्तर पूर्व)

दुबे, श्री राजाराम गिरिधारी लाल (बीजापुर उत्तर)

दुबे, श्री मूलचन्द (जिला फर्रुखाबाद—उत्तर)

दुबे, श्री उदय शंकर [जिला बस्ती (उत्तर)]

देव, श्री दशरथ (त्रिपुरा पूर्व)

देव, हिज़ हाईनेस महाराजा राजेन्द्र नारायण सिंह (काला हांडी-बोलनगिर)

देव, श्री चंडीकेश्वर शरण सिंह जू (सुरगुजा-रायगढ़)

दव, श्री सुरेशचन्द्र (कचार लुशाई-पहाड़ी)

देवगम, श्री कान्हूराम (चैबस्सा—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

दशपांड, श्री गोविन्द हरि (नासिक मध्य)

दशपांडे, श्री विष्णु घनश्याम (गुना)

देशमुख, श्री के० जी० (अमरावती—पश्चिम)

देशमुख, डा० पजाब राव एस० (अमरावती पूर्व)

दशमुख, श्री चिन्तामण द्वारकानाथ (कोलाबा)

देसाई, श्री कन्हैयालाल नानाभाई (सूरत)

देसाई, श्री खंडू भाई कासन जी (हालार)

द्विवदी, श्री एम० एल० (जिला हमीरपुर)

द्विवदी, श्री दशरथ प्रसाद (जिला गोरखपुर मध्य)

ध

धुलेकर, श्री आर० वी०, [जिला झांसी—(दक्षिण)]

धोसया, श्री सोहन लाल [जिला बस्ती—(मध्य पूर्व) व जिला गोरखपुर—(पश्चिम)—रक्षित—अनुसूचित जातियां]

धोलकिया, श्री गुलाबशंकर अमृतलाल (कच्छ पूर्व)

न

नन्दा, श्री गुलज़ारी लाल (सबरकंठ)

नटवरकर, श्री जगन्नाराव गणपत (पश्चिम खानदेश—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

नटेशन, श्री पी० (तिरुबल्लूर)

नथवानी, श्री नरेन्द्र पी० (सोरठ)

नथानी, श्री हरि राम (भीलवाड़ा)

नम्बियार, श्री के० आनन्द (मयूरम्)

नरसिंहन, श्री सी० आर० (कृष्णगिरि)

नरसिंहम्, श्री एस० वी० एल० (गुंटूर)

नस्कर, श्री पूणन्दु शेखर (डायमंड हारबर—रक्षित—अनुसूचित जातियाँ)

नानादास, श्री मंगलगिरि (ओंगोल—रक्षित—अनुसूचित जातियाँ)

नामधारी, श्री आत्मासिंह (फ़ाज़िल्का—सिरसा)

नायडू, श्री नल्ला रेड्डी (राजामंड्री)

नायर श्री एन० श्रीकान्तन (क्विलोन व मावेलिक्करा)

नायर, श्री वी० पी० (चिरायिनकिल)

नायर, श्रीमति शकुन्तला (जिला गोंडा—पश्चिम)

नायर, श्री सी० कृष्णन् (वाह्य दिल्ली)

निजलिंगप्पा, श्री एस० (चितल दुर्ग)

नेवटिया, श्री आर० पी० (जिला शाहजहांपुर—उत्तर व खेरी—पूर्व)

नेसवी, श्री टी० आर० (धारवाड़—दक्षिण)

नेसामनी, श्री ए० (नगरकोइल)

नेहरू, श्रीमति उमा (जिला सीतापुर व ज़िला खेरी पश्चिम)

नेहरू, श्री जवाहरलाल (जिला इलाहाबाद—पूर्व व जिला जौनपुर—पश्चिम)

प

पंडित, श्रीमति विजयलक्ष्मी (जिला लखनऊ—मध्य)

पटनायक, श्री उमा चरण (घुमसूर)

पटेरिया, श्री सुशील कुमार (जबलपुर उत्तर)

पटेल, श्री बहादुरभाई कुंठाभाई (सूरत—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

पटेल, श्रीमति मणिबेन वल्लभभाई (कैरा दक्षिण)

पटल, श्री राजेश्वर (मुजफ़्फ़रपुर व दरभंगा)

पन्त, श्री देवी दत्त (जिला अलमोड़ा—उत्तर पूर्व)

पन्नालाल, श्री (जिला फ़ैजाबाद—उत्तर-पश्चिम—रक्षित—अनूसूचित जातियां)

परमार, श्री रूपजी भवजी (पंचमहल व बड़ौदा पूर्व—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

परांजपे, श्री आर० जी० (भीर)

परागी लाल, चौधरी (जिला सीतापुर व जिला खरी—पश्चिम—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

पवार, श्री व्यंकटराव पारीजीराव (दक्षिण सतारा)

पांडे, डा० नटवर (साम्बलपुर)

पांडे, श्री सी० डी० (ज़िला नैनी ताल व जिला अलमोड़ा—दक्षिण पश्चिम व जिला बरेली—उत्तर)

पाटस्कर, श्री हरि विनायक (जलगांव)

पाटिल, श्री एस० के० (बम्बई नगर—दक्षिण)

पाटिल, श्री पी० आर० कानावड़े (अहमदनगर उत्तर)

पाटिल, श्री शंकर गौड वीरनगौड (बेलगांव दक्षिण)

पारिख, डा० जयंतीलाल नरवरम् (झालावाड़)

पारिख, श्री शान्तिलाल गिरधारी लाल (महसाना पूर्व)

पिल्ले, श्री पी० टी० धानु (तिरुनलवेली)

पन्नूस, श्री पी० टी० (आल्लप्पी)

पोकर साहब, जनाब बी० (मलप्पुरम्)

प्रभाकर, श्री नवल (बाह्य दिल्ली—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

फ

फोतेदार, पंडित शिवनारायण (जम्मू तथा काश्मीर)

ब

बंलस श्री घमंडो लाल (झज्जर रिवाड़ी)

बदन सिंह, चौधरी (जिला बदायूं—पश्चिम)

बनर्जी, श्री दुर्गा चरण (मिदनापुर—झड़ग्राम

बर्मन, श्री उपेन्द्रनाथ (उत्तर बंगाल—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

बलदव सिंह, सरदार (नवांशहर)

बसु, श्री ए० के० (उत्तर बंगाल)

बसु, श्री कमल कुमार (डायमंड हार्बर)

बहादुर सिंह, (श्री फ़िरोज़पुर-लुधियाना—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

ब्रजेश्वर प्रसाद, श्री (गया पूर्व)

बागडी, श्री मगनलाल (महालमुन्द)

बाबू नाथ सिंह, श्री (सुरगुजा-रायगढ़—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

बारुपाल, श्री पन्नालाल (गंगा नगर झुंझुनू—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

बालकृष्णन्, श्री एस० सी० (इरोड़—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

बालसुब्रह्मण्यम्, श्री एस० (मदुरई)

बाल्मीकी, श्री कन्हैया लाल (ज़िला बुलन्दशहर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

बास्प्पा, श्री सी० आर० (दुमकुर)

बीदरी, श्री रामप्पा बालप्पा (बीजापुर दक्षिण)

बीरबल सिंह, श्री [ज़िला जौनपुर—(पूर्व)]

बुच्चिकोटय्या, श्री सनक (मसुलीपट्टनम्)

बुरागोहिन, श्री एस० एन० (शिवसागर—उत्तर लखीमपुर)

बरुआ, श्री देवकांत (नवगांव)

बूबराघसामी, श्री वी० (पेरांबलूर)

बोगावत, श्री यू० आर० (अहमदनगर दक्षिण)

बोस, श्री पी० सी० (मानभूम उत्तर)

बैरो, श्री ए० ई० टी० (नामनिर्देशित—आंग्ल-भारतीय)

ब्रह्म-चौधरी, श्री सीतानाथ (ग्वालपाड़ा-गारो पहाड़ियां—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

भ

भंडारी, श्री दौलतमल (जयपुर)

भक्त दर्शन, श्री [ज़िला गढ़वाल—(पूर्व) व ज़िला मुरादाबाद—(उत्तर पूर्व)]

भगत, श्री बी० आर० (पटना व शाहाबाद)

भटकर, श्री लक्ष्मण श्रवण (बुलडाना अकोला—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

भट्ट, श्री चन्द्रशखर (भड़ौच)

भवानी सिंह, श्री (बाड़मेड़-जालौर)

भार्गव, पंडित मुकुट बिहारी लाल (अजमेर—दक्षिण)

भार्गव, पंडित ठाकुर दास (गुड़गांव)

भारती, श्री गोस्वामीराजा सहदेव (यवतमाल)

भारतीय, श्री शालिग्राम राम चन्द्र (पश्चिम खानदेश)

भीखा भाई, (श्री बांसवाड़ा-डूंगरपुर—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

भोय, श्री गिरधारी (कालाहांडी-बोलन-गिरि—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

भोंसले, श्री जगन्नाथराव कृष्णराव (रत्नगिरि उत्तर)

म

मंडल, डा० पशुपति (बांकुरा—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

मजीठिया, सरदार सुरजीत सिंह (तरन तारन)

मदुरम्, डा० एडवर्ड पाल (तिरुचिरापल्ली)

मल्लय्या, श्री श्रीनिवास यू० (दक्षिणी कनड़ा—उत्तर)

मल्लूडोरा, श्री गाम (विशाखापटनम्—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

मसूरियादीन, श्री (ज़िला इलाहाबाद—पूर्व व ज़िला जौनपुर—पश्चिम—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

मस्करीन, कुमारी आनी (त्रिवेन्द्रम)

महता, श्री अनूप लाल (भागलपुर व पुर्निया)

महता, श्री जसवन्तराज (जोधपुर)

महता, श्री बलवन्त राय गोपाल जी (गोहिलवाड़)

महता, श्री बलवन्त सिंह (उदयपुर)

महताब, श्री हरेकृष्ण (कटक)

महाता, श्री भजहरि (मानभूम दक्षिण व धालभूम)

महापात्र, श्री शिवनारायण सिंह (सुन्द्रगढ़—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

महेन्द्र नाथ सिंह, श्री (सारन मध्य)

महोदय, श्री बैजनाथ (निमाड)

माझी, श्री राम चन्द्र (मयूरभंज—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

माझी, श्री चैतन (मानभूम—दक्षिण व धालभूम—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

मातन, श्री सी० पी० (तिरुवल्ला)

मायदेव, श्रीमती इन्दिरा ए० (पूना—दक्षिण)

मालवीय, श्री केशव देव (जिला गोंडा—पूर्व व ज़िला बस्ती—पश्चिम)

मालवीय, श्री मोतीलाल (छतरपुर-दतिया टीकमगढ़—रक्षित-अनुसूचित जातियां)

मालवीय, श्री भगुनन्दु (शाजापुर-राजगढ़—रक्षित अनुसूचित जातियां)

मालवीय, पंडित चतुर नारायण (रायसेन)

मावलंकर, श्री जी० वी० (अहमदाबाद)

मिनिमाता, श्रीमती (बिलासपुर-दुर्ग—रायपुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

मिश्र, श्री रघुवर दयाल (ज़िला बुलन्दशहर)

मिश्र, श्री मथुरा प्रसाद (मुंगेर—उत्तर-पश्चिम)

मिश्र, श्री ललित नारायण (दरभंगा व भागलपुर)

मिश्र, प्रो० श्याय नंदन (दरभंगा—उत्तर)

मिश्र, श्री सरजू प्रसाद (ज़िला देवरिया—दक्षिण)

मिश्र, पंडित सुरेश चन्द्र (मुंगेर—उत्तर-पूर्व)

मिश्र, श्री भूपेन्द्रनाथ (बिलासपुर-दुर्ग-रायपुर)

मिश्र, पंडित लिंगराज (खुर्दा)

मिश्र, श्री लोकनाथ (पुरी)

मिश्र, श्री विभूति (सारन व चम्पारन)

मिश्र, श्री विज्ञेश्वर (गया उत्तर)

मुकने, श्री वाई० एम० (थाना—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

मुखर्जी, श्री हीरेन्द्र नाथ (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)

मुखर्जी, श्री श्यामा प्रसाद (कलकत्ता दक्षिण पूर्व)

मुतुकृष्णम, श्री एम० (वैल्लूर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

मुदलियार, श्री सी० रामास्वामी (कुम्बकौणम्)

मुरलीमनोहर, श्री (ज़िला बलिया—पूर्व)

मुरारका, श्री राधेश्याम रामकुमार (गंगानगर—झुंझुनू)

मुसहर, श्री किराई (भागलपुर व पूर्निया—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

मुसाफ़िर, श्री गुरुमुख सिंह (अमृतसर)

मुहम्मद इस्लामुद्दीन, श्री (पुर्निया—उत्तर-पूर्व)

मुहम्मद खुदा बख्श, श्री (मुर्शिदाबाद)

मुहम्मद सईद मासूदी, मौलाना (जम्मू तथा काश्मीर)

मूर्त्ति, श्री बी० एस० (एलूरु)

मेंनन, श्री के० ए० दामोदर (कोझिकोडे)

मैथ्यू, प्रो० सी० पी० (कौट्टयाम)

मैत्रा, पंडित लक्ष्मी कान्त (नवद्वीप)

मोरे, श्री शंकर शान्ताराम (शोलापुर)

मोरे, श्री के० एल० (कोल्हापुर व सतारा—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

र

रघुरामय्या, श्री कोटा (तनालि)

रघुनाथ सिंह, श्री (ज़िला बनारस मध्य)

रघवीर सिंह, चौधरी (ज़िला आगरा—पूर्व)

रज़मी, श्री सैयदुल्ला खां (सिहोर)

रणजीत सिंह, श्री (संगरूर)

रणदमन सिंह, श्री (शाहडोल-सिद्धि—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

राउत, श्री भोला (सारन व चम्पारन—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

राघवय्या, श्री पिशुपति बैंकट (ओंगोल)

राघवाचारी, श्री के० एस० (पेनुकोंडा)

राचय्या, श्री न० (मैसर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

राज बहादुर, श्री (जयपुर-सवाई—माधोपुर)

राजभोज, श्री पी० एन० (शोलापुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

राधारमण, श्री (दिल्ली नगर)

राने, श्री शिवराम रांगो (भुसावल)

रामचन्द्र, श्री डोरास्वामी पिल्ले (वेल्लोर)

रामनगीना सिंह, श्री (ज़िला गाज़ीपुर—पूर्व—ज़िला बलिया—दक्षिण पश्चिम)

रामनारायण सिंह, बाबू (हज़ारी बाग़ पश्चिम)

रामशय्या, श्री एन० (पर्वतीपुरम्)

रामसामी, श्री एम० डी० (अरुपुकुट्टई)

रामस्वामी, श्री एस० वी० (सेलम)

रामस्वामी, श्री पी० (महबूबनगर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

रामदास, श्री (होशियारपुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

रामशंकर लाल, श्री (ज़िला बस्ती—मध्यपूर्व व ज़िला गोरखपुर—पश्चिम)

रामशरण, प्रो० (ज़िला मुरादाबाद—पश्चिम)

राम सुभग सिंह, डा० (शाहाबाद—दक्षिण)

राय, श्री पतिराम (बसीरहाट—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

राय, श्री विश्वनाथ (ज़िला देवरिया—पश्चिम)

राय, डा० सत्यवान (उलूबेरिया))

राय जी, श्रीमती जयश्री (बम्बई—उपनगर)

राव, श्री कोंडू सुब्बा (एलूरु—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

राव, श्री कडयाला गोपाल (गुडिवाड़ा)

राव, दीवान राघवेन्द्र (उस्मानाबाद)

राव, श्री पेंड्याल राघव (वरंगल)

राव, श्री पी० सुब्बा (नौरंगपुर)

राव, श्री बी० शिवा (दक्षिण कनड़ा—दक्षिण)

राव, श्री कनेटी मोहन (राजमंड्री—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

राव, श्री बी० राजगोपाल (श्रीकाकुलम्)

राव, श्री वी० रामा (काकिनाडा)

राव, श्री टी० बी० बिठ्ठल (खम्मम)

राव, श्री रायासम शेषगिरि (नंद्याल)

रिचर्डसन, विशब जान (नामनिर्देशित—अण्डमान तथा निकोबार द्वीप)

रिशांग किशिंग, श्री (वाहय मणिपुर—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

रूप नारायण, श्री (ज़िला मिर्ज़ापुर व ज़िला बनारस—पश्चिम—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

रेड्डी, श्री रवि नारायण (नलगोंडा)

रेड्डी, श्री वाई० ईश्वर (कुडप्पा)

रेड्डी, श्री हलहर्वी सीताराम (कुर्नूल)

रेड्डी, श्री के० जनार्दन (महबूबनगर)

रेड्डी, श्री बद्दम येल्ला (करीमनगर)

रेड्डी, श्री सी० माधव (आदिलाबाद)

रेड्डी, श्री बी० रामचन्द्र (नैल्लौर)

रेड्डी, श्री टी० एन० विश्वनाथ (चित्तूर)

ल

लका सुन्दरम्, डा० (विशाखापत्तनम्)

लिंगम्, श्री एम० एम० (कोयम्बटूर)

लल्लन जी, श्री (ज़िला फ़ैजाबाद—उत्तर पश्चिम)

लक्ष्मय्या, श्री पैडी (अनन्तपुर)

लाल सिंह, सरदार (फ़ीरोज़पुर-लुधियाना)

लाइकर, प्रो० निवारण चन्द्र (कचार-लुशाई पहाड़ियां--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

लैस राम जोगेश्वर, सिंह, श्री (आन्तरिक मणिपुर)

लोटन राम, श्री (ज़िला जालौन व ज़िला इटावा--पश्चिम व ज़िला झांसी--उत्तर--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

व

वर्मा, श्री बुलाकी राम (जिला हरदोई--उत्तर--पश्चिम व ज़िला फ़र्रुखाबाद--पूर्व व ज़िला शाहजहांपुर--दक्षिण--रक्षित अनुसूचित जातियां)

वर्मा, श्री बी० बी० (चम्पारन उत्तर)

वर्मा, श्री रामजी (ज़िला देवरिया--पूर्व)

वल्लाथरास, श्री के० एम० (पुडुकोट्टई)

वाघमारे, श्री नारायण राव (परभणी)

विद्यालंकार, श्री अमरनाथ (जालन्धर)

विल्सन, श्री जे० एन० (ज़िला मिर्ज़ापुर--व ज़िला बनारस--पश्चिम)

विश्व नाथ प्रसाद, श्री (ज़िला आज़मगढ़--पश्चिम--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

वीरस्वामी, श्री वी० (मयूरम्--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

वेंकटारमन्, श्री आर० (तंजौर)

वेलायुधन, श्री आर० (क्विलोन व मावेलिक्करा--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

वैश्य, श्री मूलदास भूधरदास (अहमदाबाद--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

वैष्णव, श्री हनुमन्तराव गणेशराव (अम्बड़)

वोडयार, श्री के० जी० (शिमोगा)

व्यास, श्री राधेलाल (उज्जैन)

श

शंकर पांड्यन्, श्री एम० (शंकरनायिनार-कोविल)

शर्मा, श्री राधा चरण (मुरेना-भिंड)

शर्मा, श्री नन्द लाल (सीकर)

शर्मा, श्री खुशी राम (ज़िला मेरठ--पश्चिम)

शर्मा, पंडित कृष्ण चन्द्र (ज़िला मेरठ--दक्षिण)

शर्मा, प्रो० दीवान चन्द (होशियारपुर)

शर्मा, पंडित बालकृष्ण (ज़िला कानपुर--दक्षिण व ज़िला इटावा--पूर्व)

शास्त्री, पंडित अलगू राय (ज़िला आजमगढ़--पूर्व व ज़िला बलिया--पश्चिम)

शास्त्री, स्वामी रामानन्द (जिला उन्नाव व जिला रायबरेली--पश्चिम-जिला हरदोई--दक्षिण पूर्व--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

शास्त्री, श्री हरिहर नाथ (ज़िला कानपुर मध्य)

शास्त्री, श्री भगवान दत्त (शाहडोल-सिद्धि)

शाह, श्री रायचन्द भाई (छिन्दवाड़ा)

शाह, हरहाईनेस राजमाता कमलेन्दुमती (ज़िला गढ़वाल--पश्चिम व ज़िला टिहरी गढ़वाल व ज़िला बिजनौर--उत्तर)

शाह, श्री चिमनलाल चाकू भाई (गोहिलवाड़-सौरठ)

शिवनजप्पा, श्री एम० के० (मंड्या)

शिव, डा० एम० वी० गंगाधर (चित्तूर--रक्षित--अनुसूचित जातियां)

शुक्ल, पंडित भगवतीचरण (दुर्ग-बस्तर)

शोभा राम, श्री (अलवर)

संगण्णा, श्री टी० (रायगढ़-फुलवती--रक्षित--अनुसूचित आदिम जातियां)

सखारे, श्री टी० सी० (भंडारा—रक्षित —अनुसूचित जातियां)

सक्सेना, श्री मोहनलाल (ज़िला लखनऊ व ज़िला बाराबंकी)

सत्यनाथन, श्री एन० (धर्मपुरी)

सत्यवादी, डा० वीरेन्द्र कुमार (करनाल रक्षित—अनुसूचित जातियां)

सतीश चन्द्र, श्री (ज़िला बरेली—दक्षिण)

सरमा, श्री देबेश्वर (गोलाघाट-जोरहाट)

सहगल, सरदार अमर सिंह (बिलासपुर)

सहाय, श्री रघुबीर (ज़िला एटा—उत्तर-पूर्व व ज़िला बदायूं—पूर्व)

सहाय, श्री श्यामनन्दन (मुज़फ्फरपुर मध्य)

सामन्त, श्री सतीश चन्द्र (तामलुक)

साहा, श्री मेघनाद (कलकत्ता-उत्तर पश्चिम)

साहू, श्री भागवत (बालासोर)

साहू, श्री रामेश्वर (मुज़फ्फरपुर व दरभंगा रक्षित—अनुसूचित जातियां)

सिंघल, श्री श्रीचन्द (ज़िला अलीगढ़)

सिंहासन सिंह, श्री (ज़िला गोरखपुर—दक्षिण)

सिद्धनंजप्पा, श्री एच० (हासन-चिकमगलूर)

सिन्हा, श्री अनिरुद्ध (दरभंगा-पूर्व)

सिन्हा, श्री अवधेश्वर प्रसाद (मुज़फ़्फरपुर—पूर्व)

सिन्हा, श्री नागेश्वर प्रसाद (हज़ारीबाग़—पूर्व)

सिन्हा, श्री एस० (पाटलीपुत्र)

सिन्हा, डा० सत्यनारायण (सारन—पूर्व)

सिन्हा, श्री कैलाश पति (पटना मध्य)

सिन्हा, श्री गजेन्द्र प्रसाद (पालामऊ व हज़ारीबाग़ व रांची)

सिन्हा, श्री झूलन (सारन—उत्तर)

सिन्हा, श्रीमती तारकेश्वरी (पटना—पूर्व)

सिन्हा, श्री बनारसी प्रसाद (मुंगेर सदर व जमुई)

सिन्हा, श्री सत्य नारायण (समस्तीपुर—पूर्व)

सिन्हा, श्री सत्येन्द्र नारायण (गया—पश्चिम)

सिन्हा, श्री चन्द्रेश्वर नारायण प्रसाद (मुज़फ़्फ़रपुर—उत्तर-पश्चिम)

सुन्दरलाल, श्री (ज़िला सहारनपुर—पश्चिम व ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर—उत्तर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

सुब्रह्मण्यम्, श्री कंडाला (विज़ियानगरम्)

सुब्रह्मण्यम्, श्री टेकूर (बेल्लारी)

सुरेश चन्द, डा० (औरंगाबाद)

सूफ़ी, श्री मुहम्मद अकबर (जम्मू तथा काश्मीर)

सूर्य प्रसाद, श्री (मुरैना भिंड—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

सेन, श्री राज चन्द्र (कोटा-बूंदी)

सेन, श्री फरिम गोपाल (पूर्निया मध्य)

सेन, श्रीमती सुषुमा (भागलपुर दक्षिण)

सेवल, श्री ए० आर० (चम्बा सिरमौर)

सैय्यद अहमद, श्री (होशंगाबाद)

सैय्यद महमूद, डा० (चम्पारन—पूर्व)

सोधिया, श्री खूब चन्द (सागर)

सोमना, श्री एन० (कुर्ग)

सोमानी, श्री जी० डी० (नागौर पाली)

सोरेन, श्री पाल जुझार (पूर्निया व सन्थाल परगना—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

स्नातक, श्री नरदेव (ज़िला अलीगढ़—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

स्वामी, श्री एन० आर० एम० (वान्दिवाश)

स्वामी, श्री शिवमूर्त्ति (कुष्टगी)

स्वामी नाथन्, श्रीमती अम्मू (डिन्डीगल)

ह

हजारिका, श्री जोगेन्द्रनाथ (डिब्रूगढ़)

हर प्रसाद सिंह, श्री (ज़िला गाज़ीपुर-पश्चिम)

हरिमोहन, डा० (मानभूम उत्तर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)

हरिशंकर प्रसाद, श्री (ज़िला गोरखपुर—उत्तर)

हिफ्ज़ुर्रहमान, श्री एम० (ज़िला मुरादाबाद—मध्य)

हुक्म सिंह, सरदार (कपूरथला-भटिंडा)

हेडा, श्री एच० सी० (निज़ामाबाद)

हेमब्रोम, श्री लाल (सन्थाल परगना व हज़ारीबाग़—रक्षित—अनुसूचित आदिम जातियां)

हम राज, श्री (कांगड़ा)

हैदर हुसैन, चौधरी (ज़िला गोंडा—उत्तर)

लोक सभा

अध्यक्ष

श्री जी० वी० मावलंकर

उपाध्यक्ष

श्री एम० अनन्तशयनम् अय्यंगार

सभापतियों की सूची

पण्डित ठाकुर दास भार्गव

श्रीमती अम्मू स्वामी नाथन

श्री हरि विनायक पाटस्कर

श्री एन० सी० चटर्जी

श्रीमती रेणु चक्रवर्त्ती

सचिव

श्री एम० एन० कौल, बैरिस्टर-एट-ला

सचिव के सहायक

श्री एस० एल० शकधर

श्री एन० सी० नन्दी

श्री बाबू मल

श्री ई० एण्ड्रयूस

श्री वी० नरसिंहन्

याचिका समिति

पण्डित ठाकुर दास भार्गव

श्रीमती रेणु चक्रवर्त्ती

श्री असीम कृष्ण दत्त

प्रो० सी० पी० मैथ्यू

श्री पी० एन० राजभोज

लोक लेखा समिति, १९५२-५३

श्री बी० दास (प्रधान)

पण्डित मुनीश्वर दत्त उपाध्याय

श्री एम० एल० द्विवेदी

श्री श्रीनारायण दास

श्री त्रिभुवन नारायण सिंह

श्री रणबीर सिंह चौधरी

आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल

डा० मन मोहन दास

पण्डित कृष्ण चन्द्र शर्मा

श्री उमाचरण पटनायक

श्री वी० पी० नायर

श्री बी० रामचन्द्र रेड्डी

श्री जी० डी० सोमानी

श्री के० एम० वल्लाथरास

श्री हरि विनायक पाटस्कर

आंक समिति १९५२-५३

श्री एम० अनन्तश्यनम् अय्यंगार (प्रधान)

श्री बी० शिव राव

श्री यू० श्रीनिवास मल्लय्या

पण्डित ठाकुर दास भार्गव

श्री बलवन्त राय गोपाल जी महता

श्री नित्यानन्द कानूनगो

श्री मोहनलाल सक्सेना

श्री आर० वेंकटारमन

श्री बाली राम भगत

श्री अरुण चन्द्र गुहा

श्री उपेन्द्रनाथ बर्मन

पण्डित बालकृष्ण शर्मा

डा० सुरेश चन्द्र

श्री शिवराम रांगोरा

श्री राधे लाल व्यास

श्री देवेश्वर सरमा

डा० लंका सुन्दरम्

श्री जयपाल सिंह

श्री शंकर सान्ताराम मोरे

श्री कड्याला गोपालराव

श्री बी० मुनिस्वामी अव्ल० तिरुकुरलार

सरदार लालसिंह

श्री गिरराज सरन सिंह

श्री सारंगधर दास

कार्यक्रम मंत्रणा समिति

श्री जी० वी० मावलंकर **(प्रधान)**

श्री एम० अनन्तशयनम् अय्यंगार

श्री सत्य नारायण सिन्हा

श्री हरेकृष्ण महताब

श्री नरहर विष्णु गाडगिल

श्री देवकान्त बरुआ

श्री हरि विनायक पाटस्कर

श्री पी० टी० चाको

कर्नल बी० एच० जैदी

श्रीमती अम्मू स्वामी नाथन

श्री पी० टी० पुन्नूस

श्री सारंगधर दास

श्री हुक्म सिंह

श्री चण्डीकेश्वर शरण सिंह जू देव

डा० लंका सुन्दरम्

विशेषाधिकार समिति

डा० कैलाश नाथ काटजू **(प्रधान)**

श्री सत्य नारायण सिन्हा

श्री ए० के० गोपालन

डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी

श्रीमती सुचेता कृपलानी

श्री सारंगधर दास

श्री बी० शिवा राव

श्री आर० वेंकटारमन

डा० सैयद महमूद

राधलाल व्यास

नियम समिति

श्री जी० वी० मावलंकर **(प्रधान)**

श्री एम० अनन्तशयनम् अय्यंगार

पण्डित ठाकुर दास भार्गव

श्री सत्य नारायण सिन्हा

चौधरी हैदर हुसैन

श्री ओ० वो० अलगेशन

पण्डित अलगू राय शास्त्री

श्री ए० के० बसु

श्री आर० जी० दुबे

डा० एन० एम० जयसूर्य

श्री के० केलप्पन

श्री एन० सी० चटर्जी

एच० एम० महाराजा राजेन्द्र नारायण सिंह देव

श्री जयपाल सिंह

श्री के० सुब्रह्मण्यम्

सदन समिति

श्री यू० श्रीनिवास मल्लय्या **(प्रधान)**

श्री त्रिभुवन नारायण सिंह

श्री उपेन्द्रनाथ बर्मन

श्री अवधेश्वर प्रसाद सिन्हा

श्री हलहर्वी सीता राम रेड्डी

श्रीमती अम्मू स्वामिनाथन

कर्नल बी० एच० ज़ैदी

श्री तुलसीदास किलाचन्द

श्री हीरेन्द्रनाथ मुकर्जी

श्री के० ए० दामोदर मैनन

श्री सारंगधर दास

श्री गुरुमुख सिंह मूसाफिर

भारत सरकार

मंत्रिमंडल के सदस्य

प्रधान मन्त्री तथा वैदेशिक-कार्य मन्त्री—श्री जवाहरलाल नेहरू

शिक्षा तथा प्राकृतिक संसाधन व वैज्ञानिक अनुसन्धान मंत्री—मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

संचरण मन्त्री—श्री जगजीवन राम

स्वास्थ्य मन्त्री—राजकुमारी अमृत कौर

वित्त मन्त्री—श्री चिन्तामण द्वारका नाथ देशमुख

योजना तथा सिंचाई व विद्युत मन्त्री—श्री गुलज़ारी लाल नन्दा

गृह-कार्य तथा राज्य मन्त्री—डा० कैलाश नाथ काटजू

खाद्य तथा कृषि मंत्री—श्री रफ़ी अहमद किदवई

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्री—श्री टी० टी० कृष्णमाचारी

विधि तथा अल्पसंख्यक-कार्य मन्त्री—श्री सी० सी० बिस्वास

रेल तथा यातायात मन्त्री—श्री लाल बहादुर शास्त्री

निर्माण, गृह-व्यवस्था तथा रसद मंत्री—सरदार स्वर्ण सिंह

श्रम मन्त्री—श्री वी० वी० गिरि

उत्पादन मन्त्री—श्री के० सी० रेड्डी

मंत्रिमण्डल की कोटि के मन्त्री

(परन्तु मंत्रिमण्डल के सदस्य नहीं)

सांसद्-कार्य मन्त्री—श्री सत्य नारायण सिन्हा

पुनर्वास मन्त्री—श्री अजित प्रसाद जैन

राजस्व तथा व्यय मन्त्री—श्री महावीर त्यागी

सूचना तथा प्रसारण मन्त्री—डा० वी० वी० केसकर

वाणिज्य मन्त्री—श्री डी० पी० करमरकर

कृषि मन्त्री—डा० पंजाब राव एस० देशमुख

उप मन्त्री

निर्माण, गृह-व्यवस्था तथा रसद उपमन्त्री—श्री एस० एन० बुरागोहिन

संचरण उपमन्त्री—श्री राज बहादुर

प्राकृतिक संसाधन तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपमन्त्री—श्री के० डी० मालवीय

रक्षा उपमन्त्री—सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया

गृह-कार्य उपमन्त्री—बलवन्त नागेश दातार

श्रम उपमन्त्री—श्री आबिद अली

वित्त उपमन्त्री—श्री मणिलाल चतुरभाई शाह

पुनर्वास उपमन्त्री—श्री जगन्नाथराव कृष्णराव भोंसले

रेल तथा यातायात उपमन्त्री—श्री ओ० वी० अलगेशन

स्वास्थ्य उपमन्त्री—श्रीमती एम० चन्द्र शेखर

वैदेशिक-कार्य उपमन्त्री—श्री अनिल कुमार चन्दा

खाद्य तथा कृषि उपमन्त्री—श्री एम० वी० कृष्णप्पा

सिंचाई तथा विद्युत उपमन्त्री—श्री जयसुखलाल हाथी

रक्षा उपमन्त्री—श्री सतीशचन्द्र

संसदीय वाद विवाद

(भाग २—प्रश्न और उत्तर से पृथक् कार्यवाही)

शासकीय वृत्तान्त

अंक १ प्रथम भारत संसद् के तृतीयासत्र का प्रथम दिवस् संख्या १

लोक सभा

बुधवार, ११ फ़रवरी, १९५३

सदन की बैठक साढ़े तीन बजे समवेत हुई ।

[**उपाध्यक्ष महोदय** (श्री एम० ए० आय्यंगार) अध्यक्ष-पद पर आसीन थे]

प्रश्न और उत्तर

(कोई प्रश्न नहीं पूछा गया : भाग १ प्रकाशित नहीं हुआ)

सदस्यों द्वारा शपथग्रहण

श्री मगन लाल बागड़ी (महासपुन्द)

श्रीमती मिनिमाता (बिलासपुर—दुर्ग—राजपुर—रक्षित—अनुसूचित जातियां)।

पटल पर रखे गये पत्र

राष्ट्रपति का अभिभाषण

सचिव महोदय : आज मध्यान्होत्तर एक साथ एकत्रित संसद् के दोनों सदनों के समक्ष दिये गये राष्ट्रपति के अभिभाषण की एक प्रति मैं पटल पर रखता हूं ।

राष्ट्रपति : संसद् के सदस्यो, नौ महीने हुए जब हमारे संविधान के अनुकूल निर्वाचित प्रथम भारत गणराज्य संसद् के सदस्यों के रूप में आप का मैं ने स्वागत किया था तब से आप को बड़े भार वहन करने पड़े हैं और घरेलु तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार की कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा है । आज जब यहां हम समवेत हो रहे हैं हमें अपने देश के भाग्य में पूरा विश्वास है तथा यह आश्वासन है कि अपने परिश्रम के परिणामस्वरूप हमारे लोग उस ध्येय की ओर बढ़ रहे हैं जिसे कि हमने अपने सामने रखा है । इन नौ महीनों में औद्योगिक और कृषिक दोनों ही प्रकार के क्षेत्रों में प्रगति हुई है और उस पंचवर्षीय योजना को हम ने अन्तिम रूप दे दिया है जिसने की आगामी वर्षों में हमारी प्रगति दिशा का चित्रण कर दिया है। अब हमारा यह काम है कि उस पथ पर हम बढ़े चलें और जो प्रतिज्ञा अपनी जनता से की है उस को कर्यान्वित और पूरा करें । यह कोई आसान काम नहीं है क्योंकि पुरानी और नयी अनेक समस्याओं की भीड़ हम पर सर्वदा ही छा जाने के लिय प्रस्तुत रहती है और हमारी सामर्थ्य और साधनों की अपेक्षा हमारी इच्छायें बहुधा ज्यादा तेज दौड़ लगाती है ।

इस समय जब कि हमें अपने नेताओं के सारे अनुभव और बुद्धिमता की आवश्यकता है यह दुर्भाग्य की बात है कि अपने ज्येष्ठ राजनायकों में से अत्यन्त

[राष्ट्रपति]

प्रमुख और लगन वाले एक राजनायक को हम ने खो दिया है । बड़े दुःख के साथ मैं ने यह सुना कि बड़े सवेरे कल श्री एन० गोपालस्वामी आयंगर की मृत्यु हो गई । अपने भरे पूरे जीवन में उन्होंने अनेक उच्च पदों को दुर्लभ योग्यता से सुशोभित किया था । अपना स्वास्थ्य तथा अपना आराम, जिस के कि वह पूरी तरह मुस्तहक हो चुके थे उस का विचार न करके अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक वे अपने देश और जनता की सेवा में अपने जीवन को लगाये रहे । जब कोई भी कठिन समस्या हमारे सामने आती थी तो सरकार में उन के सहकारी और मैं उन की परिपक्व बुद्धिमता पर निर्भर करते थे । उन की मृत्यु देश और हम सब के लिये भारी हानि है ।

जब कि हम अपने देश में नवीन और समृद्ध भारत का निर्माण करने में तथा दरद्रिता के अभिशाप से जिन लाखों लोगों को गतकाल में इतना ज्यादा पीड़ित रहना पड़ा है उन को सुखसुविधा पहुंचाने के लिय लगे हुए हैं अवशिष्ट संसार की समस्यायें बलात हमारे सामने आ खड़ी होती हैं और हम न तो उन से बच सकते हैं और न उन से अपने को अलहदा रख सकते हैं । अन्य देशों की बातों में हस्तक्षेप करने की मेरी सरकार की लेशमात्र भी इच्छा नहीं है किन्तु स्वतन्त्रता के साथ साथ अनिवार्यरूपेण भारत पर जो जिम्मेदारी आ पड़ी है उस को तो इसे निभाना ही है । जैसा कि सर्वविदित है हमने संसार के सब देशों के प्रति मैत्री और शान्ति की नीति बरतने का प्रयास किया है शनैः शनैः वे लोग भी, जो इस से सर्वदा सहमत नहीं होते हैं, इसे समझने और इस का आदर करने लगे हैं, और यह बात मानी जाने लगी है कि भारत राष्ट्रों में शान्ति का हामी है और ऐसा कोई कदम उठाने से बचता रहेगा जिस का परिणाम लड़ाई की प्रवृति को जगाना हो । इसी नीति के अनुसरणार्थ मेरी सरकार ने कुछ ऐसे प्रस्ताव पेश किये थे जिन से उसे यह आशा थी कि कोरिया युद्ध के बारे में समझौता हो जायेगा । इन प्रस्तावों को बहुत भारी समर्थन मिला, किन्तु दुर्भाग्यवश उन महान देशों में से कुछ इन्हें स्वीकार न कर सके जिन का उस से निकटतम सम्बन्ध था । वह युद्ध जारी है, और उस से कोरिया की जनता को गहरी यातना और उस की पूरी बरबादी ही नहीं हो रही है वरन् अवशिष्ट संसार के लिये वह ख़तरे का निशान भी है । दूर पूर्व पर असर डालने वाले हाल में दिये गये कुछ वक्तव्यों और कोरिया में युद्ध का विस्तार करने वाले उन के जो परिणाम हो सकते हैं उन से समस्त संसार भर मे लोगों के मन में बहुत अशंका पैदा हुई है । मेरी सरकार भी इन बातों को गम्भीर चिन्ता से देखती है । मुझे विश्वास है कि युद्ध जो अपने साथ पहले ही भारी विपत्ति लाया है उसके विस्तार की कोई भी प्रवृत्ति रोक ली जायेगी तथा राष्ट्रों और जातियों के मन को इन समस्याओं को शान्तिपूर्ण रीति से सुलझाने की ओर मोड़ दिया जायेगा । इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये मेरी सरकार प्रयत्नशील रहेगी और किसी एक राष्ट्रपुंज के विरुद्ध दूसरे राष्ट्रपुंज से गठवन्धन किये बिना सब देशों के प्रति मैत्री की नीति पर चलती रहेगी । अपने देश में जिन लोकतन्त्रात्मक तरीकों से हम आबद्ध हैं उन में समस्याओं को सुलझाने का शान्तिपूर्ण तरीका निहित है । यदि लोकतन्त्र को बचा रहना है तो वही शान्ति का वातावरण और समझौते

की प्रवृत्ति अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी अपनानी आवश्यक है ।

निकट भविष्य में संयुक्त राष्ट्र की महासभा की बैठक फिर होगी और उन गम्भीर समस्याओं पर विचार करेगी जिन पर संसार में शांति अथवा युद्ध इस महत्वपूर्ण प्रश्न का निर्णय ठहरा हुआ है । मेरी यह हार्दिक आशा है कि वे महान राष्ट्र जिन के प्रतिनिधि वहां इकट्ठ होंगे, संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में समाविष्ट उद्देश्यों के पूर्ण करने तथा समझौते की प्रवृति को बढ़ाने के लिये प्रयास करेंगे।

अफ़्रीका महाद्वीप में, जो उपनिवेशवाद का आज भी सब से बड़ा क्षत्र बना हुआ है, हालत पहले से खराब हो रही है। मूलवंशीय प्रभुता के सिद्धान्त का दक्षिण अफ़्रीका में खुले आम ढिंढोरा पीटा जा रहा है और राज्य की पूरी शक्ति से उसे लोगों पर लादा जा रहा है । संयुक्त राष्ट्र ने इस समस्या को तय करने के जो प्रयत्न किये हैं दक्षिण अफ़्रीका की सरकार उन की अवहेलना कर रही है । मूलवंशीय विभेद के विरुद्ध आन्दोलन को जो अपने शान्ति और अनुशासनपूर्ण ढंग के लिये उलेखनीय है, ऐसे कानून और सरकारी कार्यवाही द्वारा कुचलने की कोशिश की जा रही है जो लोकतन्त्रात्मक तरीकों और संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में उद्घोषित प्रयोजन की अवहेलना के लिय अभूतपूर्व हैं । पूर्वी अफ़्रीका में आज ऐसा मूलवंशीय संघर्ष वर्तमान है जिसे यदि इस प्रकार खत्म न किया गया जिससे जनता को सन्तोष हो तो वह फैल जायेगा और अफ़्रीका के बहुत व्यापक क्षेत्रों को आप्लावित कर लेगा ऐसे अनेक लोग अब भी हैं जो इस बात को नहीं पहचानते कि आज की दुनिया में मूलवंशीय प्रभुता और विभेद को सहन नहीं किया जा सकता और इनको बनाये रखने के किसी भी प्रयास का परिणाम भयानक विपत्ति ही होगी ।

पश्चिमी और दक्षिणपूर्वी एशिया के हमारे पड़ोसी देशों से हमारे सम्बन्ध घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण हैं और हम में आपस में सहयोग की मात्रा बढ़ती जा रही है । पाकिस्तान से भी जिससे कि दुर्भाग्यवश हमारे सम्बन्ध कुछ खिचे रहे हैं हमारे सम्बन्धों में कुछ सुधार हुआ है। यह सुधार कुछ बड़ा नहीं है किन्तु यह ऐसा चिन्ह है जिसका मैं स्वागत करता हूं । दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच में हाल में हुए सम्मेलन मैत्रीपूर्ण वातावरण में हुए हैं और मुझे आशा है कि फलदायी सिद्ध होंगे । पारपत्र प्रणाली के शरू किये जाने से दोनों देशों में जो उथलपुथल हुई थी वह अब शान्त हो गई है और इस प्रणाली के कारण जो बहुत सी कठिनाइयां पैदा हुई थीं वह अब शनैः शनैः दूर की जा रही हैं । मुझ विश्वास है कि यह प्रयत्न जारी रहेगा और ऐसे चलाया जायेगा कि पूर्वी बंगाल के अलपसंख्यकों के सामने जो आधारभूत समस्यायें अब भी हैं वह दूर की जा सकें ।

अन्तर्राष्ट्रीय बैंक की सहायता से दोनों देशों के प्रतिनिधि नहरों के पानी के प्रश्न पर शिल्पिक स्तर पर संयुक्त विचार कर रहे हैं। यह प्रश्न खास तौर पर ऐसा है कि जिस पर केवल वस्तुस्थिति की दृष्टि से ही तथा शान्तिपूर्ण विचार होना चाहिये जिससे कि दोनों देशों में हो कर बहने वाले जल से दोनों देशों को महत्तम लाभ हो । इस जल का बहुत बड़ा भाग व्यर्थ में ही समुद्र में चला जाता है ।

[राष्ट्रपति]

यदि इस को ठीक तरह से बांध लिया जाये तो भारत और पाकिस्तान दोनों के ही असंख्य लोगों को यह सुख-सुविधाप्रद और समृद्धिकारी सिद्ध होगा । यह दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे प्रश्न पर भी वैमनस्य और होड़ की वृत्ति से और ऐसे वातावरण में विचार किया जाये । मुझे भरोसा है कि हमारा नया ढंग दोनों देशों के लिये फलदायी और सुन्दर परिणाम वाला होगा । यही ढंग निष्क्रात सम्पत्ति की उस समस्या को सुलझाने के लिये काम में लाया जा सकता है । जिस समस्या से भारत और पाकिस्तान के लाखों लोगों की किस्मत बंधी हुई है ।

भारत और पाकिस्तान के बीच में दूसरी सजीव समस्या जम्मू और काश्मीर राज्य की समस्या है । संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधि के साथ हमारे प्रतिनिधि इस समस्या पर फिर बातचीत कर रहे हैं । अन्य समस्याओं के समान ही इस समस्या पर भी शान्त भाव से उस राज्य के लोगों के कल्याण को सर्वदा दृष्टि में रख कर विचार किया जाना चाहिये । लड़ाई या लड़ाई की धमकियों से यह अथवा भारत और पाकिस्तान के बीच अन्य कोई अवशिष्ट समस्या हल नहीं की जा सकती । मेरी सरकार ने बार बार इस बात की घोषणा की है कि जब तक उस पर हमला न होगा वह युद्ध न छेड़ेगी और पाकिस्तान को भी इस ने इसी प्रकार की घोषणा करने की दावत दी है । यदि लड़ाई का भय खत्म कर दिया जाये तो हमारे सामने जो सब समस्यायें हैं उन पर विचार करना कहीं अधिक आसान होगा ।

अन्दरूनी क्षेत्र में जम्मू और काश्मीर राज्य में बहुत प्रकार से तरक्की हुई है । उस राज्य से भारत के सम्बन्ध के बारे में हमारे संविधान में विशिष्ट उपबन्ध है और भारत सरकार तथा जम्मू और काश्मीर के बीच हुए समझौते द्वारा उन बन्धनों को जो उस राज्य को भारत से बांधे हुए हैं और भी सुदृढ़ और घनिष्ठ कर दिया गया है । इस समझौते के एक भाग पर अमल हो चुका है और अवशिष्ट भाग जल्द ही अमल में लाया जायेगा । दुर्भाग्यवश जम्मू में नासमझी से एक आन्दोलन शरू किया गया है, यद्यपि उस का उद्देश्य भारत से और अधिक निकट एकता कायम करना है तथापि यह सम्भावना है कि उस का परिणाम बिल्कुल उल्टा ही हो । मुझे आशा है कि यह पथ भ्रष्ट आन्दोलन शीघ्र ही बन्द हो जायेगा और जम्मू और काश्मीर के लोग भारत के विशत्तर संघ में उस राज्य की प्रगति और अभिवृद्धि के लिए सहयोग करेगे । जहां भी कोई न्यायपूर्ण शिकायतें होंगी उन की निस्सन्देह जांच की जायेगी और उन्हें दूर करने की हर कोशिश की जायगी ।

भाषावार प्रान्तों के प्रश्न के कारण देश के विभिन्न भागों के लोग बहुधा आन्दोलित हुए हैं । जहां कि राज्य निर्माण में भाषा और सांस्कृति महत्वपूर्ण बातें होती हैं वहीं यह भी स्मरण रखना चाहिए कि राज्य भारत संघ में प्रशासनीय इकाइयां हैं और उनके बारे में अन्य बातों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है । सर्वोपरि यह बात है कि भारत की एकता और राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वदा प्रथम पूर्ववर्तिता देनी आवश्यक है । वैत्तिक और प्रशासनिक बातों और साथ साथ ही आर्थिक प्रगति का भी इस सम्बन्ध में महत्व है । इन सब तत्वों को दृष्टि में रखने पर ऐसा कोई कारण नहीं रहता कि राज्यों के

पुनर्संगठन के प्रश्न पर पूरी तरह से और शान्ति भाव से इस प्रकार विचार न किया जाय जिस से कि जनता की इच्छायें भी पूर्ण हों और उन को आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति में सहायता मिले मुझे इस बात का प्रसन्नता है कि पृथक आन्ध्र राज्य के निर्माण के विषय में मेरी सरकार ने कदम उठाये हैं, और मुझे आशा है कि इस नये राज्य की स्थापना में अधिक विलम्ब न होगा। नये राज्य को स्थापना के सम्बन्ध में ऐसे किसी परिवर्तन के लिये तत्सम्बन्धित सब लोगों के पूरे पूरे सहयोग की आवश्यकता होती है, और मुझे आशा है कि यह सहयोग प्राप्य भी होगा।

योजना आयोग ने पंचवर्षीय योजना सम्बन्धी अपने प्रतिवेदन को अन्तिम रूप दे कर अपने काम का पहला भाग समाप्त कर लिया है। दूसरा और अपेक्षाकृत अधिक मुश्किल भाग, अर्थात् योजना को कार्यान्वित करने का काम, देश के सामने है और उस में हमें अब लग जाना है। मुझे इस बात की खुशी है कि यह योजना तथा देश में जो पचपन (५५) सामुदायिक योजनायें (कम्युनिटी प्रोजेक्ट) शुरू की गई हैं वे हमारी जनता में भारी उत्साह पैदा कर रही हैं। कुछ ही महीनों में सैकड़ों मील लम्बी सड़कें बना ली गई हैं, तालाब खोद लिये गये हैं, पाठशालागृह निर्मित कर लिये गये हैं, और अन्य बहुत से छोटे-मोटे काम हाथ में लिये गये हैं जो कि लगभग सारे ही हमारी जनता ने स्वेच्छा श्रम से पूरे किये हैं। यह आशा और आश्वासन का चिन्ह है क्योंकि अन्ततोगत्वा हमारी जनता पर ही यह निर्भर करता है कि वह अपना भविष्य कैसा बनाये।

देश की साधारण आर्थिक अवस्था में भी सुधार के स्पष्ट चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं, हालांकि अब भी दुर्भाग्य से ऐसे कुछ क्षेत्र हैं कि जहां सूखा के कारण दुर्भिक्षसम स्थिति वर्तमान है। उपयोगी कामों द्वारा अथवा अन्य रीति से लोगों को सहायता देने के लिए इन क्षेत्रों में राज्य सरकारें पूरी पूरी कोशिश कर रही हैं। किन्तु इस समस्या को तो अपेक्षाकृत अधिक मौलिक तरीके से हल करना आवश्यक है जिस से कि दुर्भिक्ष की स्थिति की पुनरावृति से तथा अनिश्चयजन्य वर्षा पर पूर्णतया आश्रित रहने से बचा जा सके।

संविधान के अनुच्छेद २८० के उपबन्धों के अधीन सन् १९५१ के अन्तिम दिनों में संगठित वित्त आयोग ने अपना प्रतिवेदन पेश कर दिया है। आयोग की सिफारिशों को मेरी सरकार ने स्वीकार कर लिया है और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जायेगी। चालू सत्र में आयोग की सिफारिशें संसद् के दोनों सदनों के पटल पर रख दी जायेंगी।

खाद्य स्थिति में निरन्तर सुधार होता रहा है और सन् १९५२ के अन्त में १९ लाख टन का भंडार हमारे पास था जिस का परिमाण उस से पहले कभी के से कहीं अधिक हैं। जिन साधनों से यह भंडार इतना बन सका उन में से एक साधन अमरीका के संयुक्त राज्य से उधार मिला गेहूं है। १९५२-५३ के वर्ष के लिये खाद्यान्नों की प्राप्यता की सभावना पिछले दो वर्षों से कहीं अधिक अच्छी है। अपर्याप्त वर्षा के कारण बम्बई, मद्रास और मैसूर के भागों में सूखा पड़ने से खाद्यान्नों का आयात करना होगा। किन्तु पिछले वर्षों से उस का

[राष्ट्रपति]

परिमाण कम होगा यह अत्यन्त महत्व की बात है कि हम खाद्यान्न के सम्बन्ध में आत्म निर्भर बन जायें और मुझे आशा है कि पंचवर्षीय योजना के अवशिष्ट तीन वर्ष के अन्दर यह बात सम्भवतः हो जायेगी। यह पहली बार है कि हम खाद्यान्नों के पर्याप्त भंडार सहित वर्ष का प्रारम्भ कर रहे हैं। हमें इस को इतना बड़ा बनाने का प्रयास करना चाहिए जिस से कि हम किसी अनसोची स्थिति का सामना कर सकें। हाल के महीनों में खाद्यान्नों की कीमतों का झुकाव नीचे की ओर रहा है। भारत के बहुत से भागों में नियंत्रणों को ढीला कर दिया गया है और अन्न को लाने ले जाने की अधिक स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई। किन्तु सरकार का यह विचार है कि खास खास मुकामों पर नियंत्रण को बनाए रखे जिस से कि ऐसा कोई अदृश्य परिणाम न हो जिस का कि कीमतों या अनाज की वसूली पर बुरा प्रभाव पड़े।

सन् १९५१-५२ में शक्कर की पैदावार १५ लाख टन हुई जितनी को पहले कभी नहीं हुई थी। यह पहला ही मौका था जब हमारी अन्दरूनी ज़रूरतों के मुकाबले में पैदावार ज्यादा हुई। इस के फलस्वरूप यह सम्भव हुआ कि सन् १९५२-५३ के मौसम में पैदा की जाने वाली शक्कर तथा गुड़ और खंडसारी की कीमतें, यातायात और वितरण पर नियंत्रण ढीला किया जा सके। मूंगफली के तेल के पर्याप्त मात्रा में प्राप्य होने के परिणामस्वरूप उन नियंत्रणों के सिवाय जो उस की अच्छी किस्म को बनाये रखने के लिये ज़रूरी हैं हम ने उद्जनित तेलों की कीमतों पर से अन्य नियंत्रण हटा लिये हैं।

रूई और पटसन की पैदावार में बहुत भारी प्रगति हुई है। सन् १९४८-४९ में रूई की पैदावार १७·७ लाख गांठ और पटसन की २०·७ लाख गांठ थी। सन् १९५१-५२ में यह बढ़ कर रूई की पैदावार ३१·३ लाख गांठ और पटसन की ४६·८ लाख गांठ हो गई।

देश के खाद्यान्न की पैदावार बढ़ाने के लिए दो हजार ट्यूबवैल बनाने के लिए तथा छोटे-मोटे सिंचाई के कामों के कार्यक्रम को तेज़ी से पूरा करने के लिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है। फसल प्रतियोगितायें अधिकाधिक मात्रा में सारे देश में जनप्रिय होती जा रही हैं, और इन से बड़े बड़े उल्लेखनीय परिणाम हुए हैं। धान की खेती के लिए उस रीति को, जो जापानी रीति कही जाती है आरम्भ करने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयोग किये जा रहे हैं। इस रीति से यह आशा की जाती है कि पैदावार बढ़ाने में इस के बहुत ठोस परिणाम होंगे। जम्मू प्रान्त में एक विस्तृत यन्त्रसज्जित फ़ार्म शुरू किया गया है। उर्वरकों और अन्य प्रकार के खाद के विस्तृत प्रयोग तथा अच्छी किस्म के बीज के प्रयोग के लिए जोरों से प्रयास किये जा रहे हैं। खास तौर पर सामुदायिक केन्द्र इस बात के लिये प्रयत्नशील हैं कि विभिन्न तरीकों से, जिन में ग्राम्य विस्तार सेवा भी सम्मिलित है, खाद्यान्नों की पैदावार को बढ़ाया जाये।

ढोरों के सुधार के लिये ९२ प्रमुख फ़ार्म केन्द्र सन् १९५१-५२ में शुरू किये गये हैं। इस के अतिरिक्त यह विचार है कि प्रत्येक सामुदायिक योजना क्षेत्र में

एक प्रमुख ग्राम्य इकाई कायम की जाये। अच्छी किस्म की ऊन की पैदावार के लिये प्रबन्ध करने के हेतु भेड़ अभिजनन की योजना का पुनर्संगठन किया गया है। वन्य जीवन को बनायें रखने के लिये एक मंडल की स्थापना की गई है। जोधपुर में मरु-भूमि-वनरोपण गवेषणालय संस्था की स्थापना की गई है। मरू क्षेत्रों के सुधार का काम यह अपने हाथ में लेगा।

सन् १९५२ में सिन्दरी उर्वरक कारखाने ने एक लाख अस्सी हजार टन एमोनियम सल्फेट बनाया है। सन् १९५३ में इस की परिमात्रा बढ़ कर ३ लाख टन हो जायेंगी ऐसी आशा है। इस की दर ३६५ रुपया प्रति टन से घटा कर ३३५ रुपया प्रति टन कर दी गई है।

सन् १९५२ में सूती कपड़े की पैदावार जो कि ४ अरब साठ करोड़ गज़ थी बहुत ही संतोषप्रद रही और अगले वर्ष के लिये और भी अधिक पैदावार की संभावना है। यद्यपि मिल निर्मित कपड़े की कीमतों का कम होना खुशी की बात है तथापि उस के कारण करघे के बने कपड़े की बिक्री कम हो गई और करघा वस्त्र व्यवसाय को विपत्ति का सामना करना पड़ रहा है; इस व्यवसाय से हमारे देश में लाखों आदमियों की जीविका चलती है। मेरी सरकार इस को और अन्य कुटीर उद्योगों को बहुत महत्व-पूर्ण मानती है क्योंकि यह बहुत लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। और इसलिये भी क्योंकि बेकारी को दूर करने के ये अत्यन्त प्रभावी साधन हैं। अखिल भारतीय खादी और ग्राम्य उद्योग मंडल की स्थापना की गई है और ग्राम्य तथा कुटीर उद्योगों के लिये आवश्यक शिल्पिक विकास और गवेषणा के लिये धन प्राप्त करने के लिये कानून बनाया जा रहा है। करघा वस्त्र व्यवसाय को सहायता देने के लिये मिल उद्योग द्वारा बनाई जाने वाली धोतियों का परिमाण सन् १९५१-५२ की पैदावार का साठ प्रतिशत कर दिया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों के गिरने के कारण चाय व्यवसाय पर बुरा प्रभाव पड़ा है। चाय बागान को अपेक्षाकृत अच्छी खास सुविधायें दिलाने के लिये सरकार ने कार्य-वाही की है और उस का इरादा है चाय उद्योग के हर पहलू की, जिस में बाजार में माल भेजने की व्यवस्था भी सम्मिलित होगी, जांच करने के लिये एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की जाये। चाय की कीमतों के सुधार के चिन्ह अब दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

संसारव्यापी कीमतों में पुनर्संयोजन से वैदेशिक व्यापार और निर्यात कीमत में कमी हुई है, और कुछ कम सीमा तक उस की मात्रा में भी कमी हुई है। भुगतान संतुलन की स्थिति भी संतोषजनक रही है क्योंकि आयात भी कम हुआ है।

भारत के उत्तर पूर्व और अन्य भागों के जन जाति क्षेत्रों के प्रति मेरी सरकार विशेष ध्यान दे रही है और उन के विकास के लिये सहायता दी जा रही है। पिछड़े वर्गों की समस्याओं पर विचार करने के लिये एक आयोग की नियुक्ति की गई है। भारत में समाचारपत्रों की समस्याओं पर विचार करने के लिये एक समाचारपत्र आयोग की नियुक्ति की गई है।

बड़ी बहुमुखी नदी योजनाओं में अच्छी प्रगति हुई है और उन में से कुछ प्रवर्तन स्थिति में जल्दी आने वाली हैं। अन्य योजनाओं के निर्माण कार्य में निरन्तर प्रगति हो रही है।

विशाखापटनम् में हिन्दोस्तान नोप्रांगण की कार्यक्षमता में सुधार करने के लिये तथा

[राष्ट्रपति]

लोहे और इस्पात उद्योग के विस्तार के लिये कदम उठाये गये हैं। कोयला, इस्पात, सीमेन्ट, नमक और उर्वरकों की पैदावार पिछले वर्ष से उच्चतर स्तरों पर पहुंच गई है।

नये राष्ट्रीय प्रयोगालयों और गवेषणा प्रतिष्ठानों की स्थापना के द्वारा वैज्ञानिक गवेषणा में और अधिक प्रगति हुई है। केन्द्रीय विद्युत रसायनिक गवेषणा प्रतिष्ठान कराईकुडी में खोला गया है और मद्रास में केन्द्रीय चर्म गवेषणा प्रतिष्ठान खोला गया है। शीघ्र ही रुड़की में वास्तु-गवेषणा प्रतिष्ठान खोला जायेगा। मोनाज़ाईट बालुका विधायन के लिये तिरुवांकुर-कोचीन में अलवाई में कारखाना स्थापित किया गया है और बम्बई राज्य में अम्बरनाथ में यन्त्रोपकरण आद्यरूप कारखाने को हाल में खोला गया है। बंगलोर के हिन्दोस्तान विमान कारखाने ने अपनी ही प्ररचनाओं के अनुकूल कई प्रशिक्षक विमान बनाये हैं जो अब काम में आ रहे हैं। जबलपुर के निकट एक प्रतिरक्षा कारखाना बन कर पूरा होने वाला है।

मेरी सरकार ने यह निश्चय किया है कि वर्तमान वैमानिक समवायों को अपने नियंत्रण में ले ले और अनुसूचित वैमानिक चर्याओं को चलाये। इस प्रयोजन के लिये दो राज्य निगम स्थापित करने का विचार है। एक आन्तरिक चर्याओं के लिये और दूसरा बाह्य चर्याओं के लिये।

भारतीय रेलें अगले मास में अपनी शताब्दि प्रदर्शनी का समारोह कर रही हैं। यह राज्य उपक्रम जिस पर समुदाय का आधिपत्य है प्रगति करता रहा है और अपने कार्यक्षेत्र को बढ़ा रहा है।

किसी जाति या राष्ट्र की प्रगति अन्ततोगत्वा शिक्षा पर निर्भर करती है। देश में शिक्षा की वर्तमान अवस्था के बारे में मेरी सरकार को बहुत चिन्ता है। इसमें गुण और परिमाण दोनों ही से सम्बन्धित अनेक प्रकार की कमियां हैं और डिप्लोमा और डिग्री प्रदान करने की ओर इस में बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है और सांस्कृतिक वैज्ञानिक और शिल्पिक विषयों में और सर्वोपरि अच्छी नागरिकता के लिये प्रशिक्षा में व्यक्ति के वास्तविक सुधार की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। बुनियादी तालीम एक प्रतिमान के रूप में शुरू की गई है किन्तु इस दिशा में दुर्भाग्यवश अब तक प्रगति बहुत धीमी हुई है। बुनियादी माध्यमिक और सामाजिक शिक्षा के सुधार की बहुत सी योजनायें विचाराधीन हैं और माध्यमिक शिक्षा के लिए एक आयोग नियुक्त किया गया है।

भारत की स्थिति पर सब ओर से दृष्टि डालने से यह प्रतीत होता है कि बढ़ती हुई गति से चतुर्मुखी प्रगति हुई है। यह संतोष की बात है। किन्तु जो ध्येय हमने अपने सामने रखा है वह अभी बड़ी दूर है और उस के लिए अधिक और लगातार प्रयास की तथा अधिक गतिशील परिवर्तन की आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य ऐसा कल्याणमय राज्य है जिस में इस देश के सब लोग भागीदार होंगे, और इस के लाभों और आभारों में समान रूप से अंश बटायेंगे। जब तक दरिद्रता और बेकारी है समुदाय के एक विभाग को इस साझेदारी से कोई लाभ नहीं मिलता। अतः यह आवश्यक है कि हमारा यह ध्येय हो कि सब लोग पूरी तरह से और उत्पादक कार्य में लग जायें।

सन् १९५३-५४ के वैत्तिक वर्ष के लिये भारत सरकार की प्राक्कलित प्राप्तियों और व्यय का विवरण आप के सामने रखा जायेगा। लोक सदन के सदस्यों से अपेक्षा की जायेगी कि वे अनुदान माँगों पर विचार करें और उन्हें स्वीकार करें।

चालू वैत्तिक वर्ष में होने वाले अतिरिक्त व्यय के लिये अनुपूरक अनुदानों को स्वीकार करने के लिये आप से कहा जायेगा।

आप के सामने २४ विधेयक लम्बित हैं। कुछ ने तो समिति प्रक्रम पार कर लिया है। उन में से कुछ जो अब भी समितियों के विचाराधीन हैं, इस सत्र के अभ्यन्तर उन की सिफारिशों सहित आप के सामने लायें जायेंगे।

आप के सामने जो अन्य विधेयक प्रस्ताव लाये जाने उद्दिष्ट हैं उन में से कुछ का यहां विशेष उल्लेख किया जा सकता है। लोक प्रतिनिधान (संशोधन) विधेयक, राष्ट्रीय गृह संयोजन विधेयक, वैमानिक चर्या निगम विधेयक, न्यूनतम भृति (संशोधन) विधेयक तथा भारतीय प्रशुल्क (संशोधन) विधेयक।

मुझे हार्दिक भरोसा है कि बुद्धिमत्ता और सहिष्णुता तथा सहयोगात्मक प्रयास की प्रवृत्ति आप का आप के काम में पथ-प्रदर्शन करेगी और जिस देश और जनता की सेवा का सौभाग्य हम सब को प्राप्त है उन के लिये सुन्दर फल प्रदान करेगी।

श्री गोपालस्वामी अय्यंगार, श्री नलिनी रंजन सरकार और श्री वी० आई० मुनिस्वामी पिल्ले का देहान्त

प्रधान मंत्री और सदन के नेता (श्री जवाहरलाल नेहरू): यह मेरा दुर्भाग्य और एक अप्रिय कर्तव्य है कि मुझे समय समय पर सदन में अपने सहयोगियों के देहावसान का उल्लेख करना पड़ता है। मैं सदन को कोई समाचार नहीं सुनाने लगा हूं, क्योंकि हम सब को यह विदित है कि कल प्रातः काल बहुत सवेरे श्री गोपालस्वामी का मद्रास में देहावसान हो गया। हमें उन की अन्त्येष्टि का भी समाचार मिल चुका है जिस में सरकार और जनता दोनों ने ही बहुत अधिक सम्मान प्रकट किया। इस दुर्भाग्यपूर्ण तथा शोचनीय घटना के सम्बन्ध में हम अभी अभी राष्ट्रपति के विचारों को भी सुन चुके हैं।

सरकार के हम सभी सदस्यों का श्री गोपालस्वामी आय्यंगार के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा है—हम में से कुछ एक की दूसरों की अपेक्षा अधिक देर से उन से घनिष्टता रही है। छै वर्ष से कुछ अधिक समय हुआ होगा, जब से हम इस सरकार में सम्मिलित हुए हैं हम इकट्ठे ही रहे हैं। कुछ एक की पृष्ठभूमि औरों से भिन्न रही है। उन में से बहुत सों का जो कि उस समय सरकार में थे या अब हैं राष्ट्रीय आन्दोलन से गहरा सम्बन्ध रहा है और वे उस आन्दोलन के चढ़ाव और उतार में कई दशाब्दियों तक एक दूसरे के साझीदार रहे हैं। जब हम सरकार में आये तो स्वाभाविकतया हमारी यह इच्छा हुई कि अन्य लोगों का भी सहयोग और उन की सहायता प्राप्त की जाये, जिस से कि हम मिल-जुल कर अधिक से अधिक योग्यता से देश की सेवा कर सकें।

श्री गोपालस्वामी अय्यंगार उन में से एक थे जिन्हों ने कि इस कठिन कार्य में हमारा हाथ बटाया। इन सब वर्षों

श्री जवाहरलाल नेहरू

उन्होंने सरकार में सब से अधिक कार्यभार को सम्भाला। वे न केवल उन मंत्रालयों के ही प्रभारी थे जिन के लिये कि बहुत अधिक बुद्धिमत्ता और धैर्य तथा निपुणता की आवश्यकता थी, अपितु उन के सहयोगी भी उन पर, उन के अनुभव पर बहुत अधिक भरोसा करते थे और बहुत से अन्य विषयों के सम्बन्ध में, जिन का कि उन के मंत्रालय से सम्बन्ध भी नहीं था, उन से मंत्रणा लेते थे। हम उन्हें एक वयोवृद्ध नीतिज्ञ समझते थे, जो कि बहुत बुद्धिमान्, बहुत अनुभवी, बहुत सहनशील, बहुत समझदार और दूसरों के भार को हल्का करने के लिये सदा उद्यत रहते थे। अतः चाहे यह काश्मीर की पेचीदा समस्या होती या कोई और समस्या होती हो सब के विशषज्ञ थे और हम उन्हीं के पास पहुंचते थे। वास्तव में जैसा कि सदस्यों को भलीभांति विदित है कुछ वर्ष पूर्व वे काश्मीर के पांच या इस से अधिक वर्ष तक प्रधान मंत्री रह चुके थे। चाहे पाकिस्तान से सम्बन्धित कोई विषय होता या हमारे शरणार्थियों के पुनर्वास का अति कठिन प्रश्न होता हम श्री गोपालस्वामी अय्यंगार के पास ही मंत्रणा के लिये जाते थे और वही हमें अपनी मंत्रणा देते भी थे और जब हमें विदेशों में दूसरों से बात-चीत करने के लिये किसी विशेष प्रयोजन से कोई दूत-सा भेजना होता था तो हम उन्हीं की ओर देखते थे। मैंने इन बातों का इसलिये उल्लेख किया है ताकि इस बात का पता लग सके कि उन्होंने किन भिन्न भिन्न तरीकों से देश और सरकार की सेवा

परन्तु इस सब के पीछे थी यह परिपक्व बुद्धि, किसी समस्या सुलझाने में सहनशीलता, यह मैत्रीभाव और यदि मुझे यह कहने दिया जाये कोई निश्चय करने और प्रत्येक बात पर विचार करने में शीघ्रता का अभाव, जिस से कि वे जो कोई भी मंत्रणा हमें देते थे वह बहुमूल्य होती थी और हमें प्रभावित करती थी। जब मैं इन पांच या छः वर्षों पर विचार करता हूं तो मैं यह अनुभव करता हूं कि हम उन पर कितना अधिक निर्भर करते थे और विशष रूप से मैं उन पर निर्भर करता था। कुछ मास पूर्व जब वे बीमार पड़ थ और धीरे धीरे हमें यह स्पष्ट हो गया था कि अब उन के बचने की सम्भावना नहीं है हम ने अपने मन से इस बढ़ते हुए विश्वास को निकाल देने की बहुत चेष्टा की, क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि ऐसा हो और इस के परिणाम का विचार करके हमें बहुत बुरा लगता था। अतः हम ने यह सोच कर अपने आप को धोखा दिया कि शायद वे अच्छे हो जायें और बच जायें और हमारे काम में हमारी सहायता करने के लिये पुनः वापिस लौट आयें। किन्तु उन्हें फिर वापिस नहीं आना था और अन्त में लगभग डेढ़ दिन पूर्व उन का देहान्त हो गया और उन की बीमारी के सम्बन्ध में हमारे मन की इतनी लम्बी तैयारी के बावजूद भी जब हमें यह अन्तिम समाचार मिला तो हम सब को बड़ा धक्का पहुंचा।

हम लोगों का, जो सरकार में हैं, इस से भार और कठिनाई बहुत अधिक बढ़ जायेगी। मैं सदन को यह नहीं बतला सकता कि इस से कई बातों में मेरे लिये कितना अन्तर पड़ेगा, क्योंकि वे——जो कुछ मैं कह चुका हूं उस के अतिरिक्त——एक महान् सहयोगी और बुद्धिमान् व्यक्ति थे

जिन के पास कि हम कठिनाई के समय जा सकते थे। वे एक ऐसे मित्र थे जिन की मित्रता को मैं बहुत बहुमूल्य समझता था वे मुझे प्रिय थे और मैं तो यहां तक कहूंगा कि वे मुझ पर "छा" गये थे जैसे कि वे औरों पर भी छाये हुए थे, क्योंकि हम दोनों की पृष्ठभूमि अलग अलग थी। हम जीवन के विभिन्न मार्गों पर चल कर आपस में मिले थे। इस में सन्देह नहीं कि हम ने एक दूसरे के विषय में सुना था और कई बार दूर से एक दूसरे को देखा भी था, किन्तु हम एक दूसरे को जानते नहीं थे। किन्तु भाग्य और परिस्थितियों ने हमें एक साथ मिला दिया। मैं यह कहूंगा कि हमारा कोई प्रथम दृष्टि में प्रेम नहीं हो गया, किन्तु धीरे धीरे हमने एक दूसरे को पहिचाना और हमारा मित्रता बढ़ती गई और ज्यों ज्यों समय बीतता गया यह मित्रता गहरी और दृढ़ होती गई। अतः गत छै वर्षों में यह सब जो हुआ है उस के एक दम समाप्त हो जाने से जो एक खाई सा बन गई है और बिल्कुल एक घाव सा बन गया है वह सरलता से और शीघ्रता से भरता दिखाई नहीं देता। हम में से कुछ पर भार और अधिक बढ़ गया है और इस के साथ ही एक एकाकीपन-सा अनुभव होने लगा है, क्योंकि हम में से कुछ थोड़े-बहुत उस पीढ़ी के हैं जो धीरे धीरे समाप्त होती जा रही हैं। हमें यथाशक्ति अच्छी प्रकार इस बोझ को उठाना होगा और हम इसे उठाने की भरसक कोशिश करेंगे। तथापि, समय बीतता जाता है और इस के साथ ही पीढ़ियां गुज़रती जाती हैं और दूसरे व्यक्ति उन का स्थान ले लेते हैं। अतः यह सब बातें दिमाग में आ जाती हैं और हमारी दृष्टि अतीत की ओर जाती है और हम वर्त्तमान को देखते हैं और हम भविष्य पर दृष्टिपात करते हैं और हम उन महानात्माओं के प्रति शोक प्रकट करते हैं जो कि अब इस संसार में नहीं रही। तथापि, हमें तो इस बोझ को उठाना ही है और यदि हम सब मिल कर इसे उठायेंगे तो यह कुछ थोड़ा हल्का हो जायेगा।

श्रीमान्, मुझे आशा है कि आप कृपा करके उन की धर्मपत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्यों तक इस मृत्यु पर न केवल मेरी अकेले की, अपितु सरकार और इस सदन की गहरी समवेदना को तथा उनके प्रति हमारी महान् आदर की भावना को पहुंचा देंगे। मुझे पक्का निश्चय है कि सदन के सभी सदस्य इस में मेरे साथ होंगे।

उपाध्यक्ष महोदय : स्वर्गीय श्री गोपालस्वामी अय्यंगार के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है उस से मैं पूर्णतया सहमत हूं। वह हम सब के बड़े भाई थे। उन की मृत्यु से राष्ट्र के एक योग्यतम प्रशासक और बहुत बड़े नीतिज्ञ की हानि हुई है। यद्यपि वे एक दूसरी सरकार की नौकरी में लगे थे जिस से हम ने शासन की बाग डोर सम्भाली थी, किन्तु वे अपने काम से अपने आस-पास के सभी लोगों के विश्वास-पात्र बन गये थे। और इतना होते हुए भी वे उन्हें इतनें योग्य, इतने ईमानदार और स्पष्टवादी दिखाई दिये कि उन्होंनें उन्हें इस सदन के लियें मनोनीत कर लिया और इस सदन के सदस्य के रूप में उन्होंने देश की अनुपम सेवा की। वे राज्य परिषद के भी सदस्य थे। जम्मू और काश्मीर के दीवान के रूप में उन का उस राज्य से जो सम्पर्क रह चुका था उस से

उपाध्यक्ष महोदय

लोगों को काफी भरोसा हुआ और बाद में उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ में हमारे पक्ष को प्रस्तुत करने के लिये हमारे प्रतिनिधि-मण्डल का नेता बना कर वहां भेजा गया।

वे सदा प्रिय लगते थे उनके मिलने का ढंग बहुत ही आकर्षक था और वृद्ध या युवा कोई भी उन से मिल सकता था और जब वह उन से मिल कर वापस आता था तो उसे यह विश्वास हो जाता था कि श्री गोपालस्वामी अय्यंगार उस की सहायता के लिये सब कुछ करेंगे। हमारा एक बड़ा नीतिज्ञ हम से सदा के लिये बिछुड़ गया है जो बिना किसी आडम्बर के सदा हमारी सहायता करता था। हम और हमारा देश एक ऐसे पुरुष रत्न को खो बैठे हैं। यद्यपि हम यह चाहते हैं कि वे अधिक समय तक हमारे साथ रहते किन्तु भगवान की इच्छा कुछ और ही है। उन्होंने अपना पूर्ण जीवन बिताया और इकहत्तर वर्ष की आयु में उनका देहान्त हुआ। मुझे पूरा निश्चय है कि उनकी आत्मा को शाश्वत शान्ति और सद्गति प्राप्त होगी। मुझे निश्चय है कि दिवंगत आत्मा के प्रति इस गहरी समवेदना को प्रकट करन में सदन मुझ से सहमत होगा और मुझे शोकाकुल परिवार के सदस्यों तक अपने शोक तथा समवेदना को भेजने की आज्ञा देगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय ने मुझे जो थोड़ी सी पंक्तियां लिख कर भेजी हैं मैं उन्हें भी सदन के समक्ष पढ़ कर सुना देता हूं :

"आज प्रातः श्री एन० गोपालस्वामी अय्यंगार के निधन का शोकप्रद समाचार सुन कर मुझे बहुत दुःख हुआ। उन की लम्बी और सतत बीमारी से उन के अच्छे होने और रक्षा मंत्री के उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य भार को सम्भाल लेने की आशा क्षीण होती जा रही थी। हमें एक बुद्धिमान् और कार्यकुशल पथप्रदर्शक तथा सहयोगी को खो कर अत्यधिक दुःख हुआ है। वे एक योग्य तथा सहानुभूतिपूर्ण प्रशासक थे और उन्होंने विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद से उन्हें सौंपे गय विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र को अनुपम सेवा की है।

मुझे पूरा निश्चय है कि सदन दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि और सम्मान प्रदर्शित करेगा और इस दुखद मृत्यु पर अपनी गहरी समवेदना और क्षति प्रकट करेगा और अपना शोक समवेदना को मृतक के परिवार तक भी भेजेगा।

मैं इस समय सदन के इस शोक प्रकाश में सम्मिलित होता हूं।"

मुझे सदन को दो और मित्रों—श्री नलिनी रंजन सरकार तथा श्री वी० आई० मुनिस्वामी पिल्ले—के दुखद देहान्त की भी सूचना देनी है।

श्री नलिनी रंजन सरकार का देहान्त २५ जनवरी १९५३ को सत्तर वर्ष की अवस्था में उन के कलकत्तास्थित निवास-स्थान में हुआ था। श्री सरकार १९४१ से १९४३ तक जब कि वे कार्यपालिका परिषद् में थे पुरानी केन्द्रीय सभा के सदस्य थे। उन्होंने १९४३ में महात्मा गांधी के उपवास के समय विरोधस्वरूप कार्यपालिका परिषद् से त्यागपत्र दे दिया था।

श्री मुनिस्वामी पिल्ले का २८ जनवरी, १९५३ को लम्बी बीमारी के पश्चात् कोयम्बटूर में देहान्त हो गया उन की आयु त्रेसठ वर्ष की थी। श्री पिल्ले मद्रास

के एक प्रमुख कांग्रेसी और हरिजन नेता थे वे १९३७ में मंत्री भी थे । वे भारत की संविधान सभा और बाद में मद्रास विधान सभा के सदस्य थे ।

हम इन मित्रों के देहावसान पर शोक प्रकट करते हैं और मुझे पूरा निश्चय है कि उन के परिवारों को समवेदना भेजने में सदन मेरे साथ होगा ।

सदन कृपा करके शोक प्रकट करने के लिये दो मिन्ट के लिये चुप-चाप खड़ा हो जाये ।

श्री वी० आई० मुनिस्वामी पिल्ले का देहान्त

सदन दो मिन्ट के लिये चुपचाप खड़ा हो गया ।

वर्तमान सदन के एक सदस्य तथा मंत्री श्री गोपालस्वामी अय्यंगार की स्मृति में मैं आज के लिये सदन की बैठक को स्थगित करने का प्रस्ताव करता हूं ।

अब सदन की बैठक कल के स्थान पर परसों शुक्रवार को २ बजे म० प० होगी क्योंकि कल ही वास्तव में शिवरात्रि है ।

इस के पश्चात् सदन की बैठक शुक्रवार १३ फरवरी, १९५३ के दो बजे तक के लिये स्थगित हो गई ।

GIPD—H8—167 PSD—7-9-53—285